पाठ 4. मैं भगवान नहीं हूँ

पाठ का परिचय

आस्ट्रेलिया के एक खिलाड़ी ने सचिन तेंदुलकर को भारत में भगवान तुल्य बताया, लेकिन सचिन ने यह स्पष्ट करते हुए कहा कि वह भगवान नहीं हैं। इस सबके बावजूद यह सत्य नहीं झुठलाया जा सकता कि सचिन पूरे विश्व में लोगों के प्रिय बन गए हैं। सचिन का जन्म 24 अप्रैल 1973 को मुंबई में हुआ था। उन्होंने क्रिकेट सीखने के लिए रमाकांत अचरेकर को अपना गुरु बनाया। विद्यालय स्तर पर आयोजित प्रतियोगिता में उन्होंने अपने सहपाठी विनोद कांबली की साझेदारी में 664 रन बनाए थे। इसके बाद वे लगातार नए-नए कीर्तिमान स्थापित करते चले गए। वे केवल बल्लेबाज़ी के क्षेत्र में ही श्रेष्ठ नहीं हैं, बल्कि गेंदबाज़ी की कला भी उन्हें आती है। इसका प्रमाण वे दे चुके हैं। उनकी प्रतिभा के कारण ही उन्हें अनेक उपाधियों से नवाज़ा गया है। सचिन तेंदुलकर सदी के महानतम खिलाड़ियों में से एक हैं, लेकिन उनका स्वभाव सरल है और व्यक्तित्व अहंकार से परे है।

पाठ में निहित जीवन-मूल्य

यदि मनुष्य चाहे तो कठिन परिश्रम के द्वारा अपने लिए ऊँचे से ऊँचा स्थान प्राप्त कर सकता है। इस धरती पर ऐसे अनेक लोग हुए हैं, जिन्होंने अपने कर्मों से लोगों के दिलों में अपना स्थान बनाया है। सचिन तेंदुलकर ऐसे ही एक व्यक्ति हैं, जिन्होंने विश्व में अपना विशेष स्थान बनाकर लोगों के दिलों में स्थान पा लिया है। प्रत्येक व्यक्ति में किसी न किसी तरह की विशेषता होती है, आवश्यकता है केवल अपने-आप कठिन राह पर आगे बढ़ने की।

पाठ का वाचन

पाठ की शुरुआत सचिन तेंदुलकर के जीवन-परिचय से करें। बच्चों से भी सचिन तेंदुलकर के बारे में कुछ बताने को कहें। बच्चों से कहें कि वे सचिन तेंदुलकर के क्रिकेट जीवन से जुड़े आँकड़े बताएँ। पूरे पाठ का पहले आदर्श वाचन करें। कठिन शब्दों के अर्थ बताएँ। उसके बाद बच्चों से पाठ का वाचन करवाएँ।

महत्वपूर्ण चर्चा

बच्चों से निम्नलिखित प्रश्न पूछकर चर्चा करें –

- वे जीवन में क्या बनना चाहते हैं?
- उन्हें कौन-सा खेल पसंद है?
- वे क्रिकेट में किस खिलाड़ी को अधिक पसंद करते हैं?
- सचिन तेंदुलकर के बारे में वे क्या जानते हैं?
- सचिन से बेहतर खिलाड़ी कौन है?